## जोशी, वाजपेयी और नायडू को बी.एच.यू. द्वारा मानद उपाधियां

# कुर्सी बचाने की कुलपति की कोशिश और शिक्षा में संघी घुसपैठ की मुहिम का बदबूदार मेल

कृष्णगोविन्द सिंह

अभी हाल ही में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ने मुरली मनोहर जोशी, अटल बिहारी बाजपेयी और चन्द्र बाबू नायडू को मानद डाक्टर उपाधियां दीं। अचानक हिन्दुत्व के इन महारथियों को मानद डिग्रियां बांटने का विचार कुलपति महोदय को कहां से आया? और किन उपलब्धियों के एवज में ये डिग्रियां बांटी गयीं?

दरअसल, अपनी डगमगाती कुर्सी को संभाले रखने के लिए कुलपति एस.वाई सिम्हाद्रि ऐसे लोगों को मानद उपाधियों की रेवड़ियां बांट रहे हैं जो उनकी कुर्सी को बचाने में उनकी मदद करें। मुरली मनोहर जोशी को मानद डाक्टर आफ साइन्स की उपाधि देने के पीछे यह कारण बताये गये हैं– **'डा. जोशी श्री राम की जन्मभूमि में महान मंदिर के निर्माण हेतु सतत् सक्रिय रहे हैं, जिसका हमारी धार्मिक परम्पराओं और गरिमा के सामाजिक प्रतीकों के सन्दर्भों में परमोच्च महत्ता का स्थान है और जो प्रभावशाली मानवीय और अति मानवीय भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है।'** इसके अलावा गौरक्षा आन्दोलन में भाग लेने और अल कबीर बूचड़खाने को बन्द कराने के लिए सत्याग्रह में भाग लेने को भी कारणों की सूची में जोड़ा गया है। बी.एच.यू. के बुद्धिजीवियों, अध्यापकों और छात्रों ने कुलपति के निर्णय का भारी विरोध किया।

जोशी के बाद बारी आयी प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू की। बाजपेयी के एल. एल.डी. और नायडू की डी.लिट् की डिग्रियां दी गयीं।

मानद उपाधियों की रेवड़ियों के बंटने का सिलसिला यहीं नहीं थम जाता। विश्वविद्यालय का 'विजिटर' राष्ट्रपति होता है सो, राष्ट्रपति के सचिव गोपाल गांधी को मानद उपाधि दी गई। बी.एच.यू. में मानवाधिकार उल्लंघन के आधा दर्जन मामले मानवाधिकार आयोग में चल रहे हैं सो मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति जे.एस.वर्मा को मानद एलएल.डी. दे दी गयी। क्या आपने सुना है कि किसी विश्वविद्यालय ने अपने ही कार्य परिषद के सदस्य को मानद उपाधि दी हो? अगर नहीं तो लीजिए सुनिए—बी.एच.यू. के एक्जीक्यूटिव कौंसिल के सदस्य प्रो. देवेन्द्र शर्मा को भी बी.एच.यू. से मानद उपाधि मिली है।

असल में दिल्ली में विपक्षी दलों से जुड़े कुछ पूर्व छात्र नेताओं और कुछेक सांसदों ने जो परिस्थितियां तैयार कर दीं हैं उससे प्रो. सिम्हाद्रि स्वयं को असुरक्षित अनुभव कर रहे हैं। वे राजनीतिज्ञों और राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पदों पर आसीन व्यक्तियों को उपाधियां देकर अपनी कुर्सी बचाने की कोशिश कर रहे हैं। पूरे परिसर में जनवादी शिक्षकों, बुद्धिजीवियों और छात्रों में उनके विरुद्ध जबर्दस्त असंतोष और आक्रोश व्याप्त है। बी.एच.यू. के एक शिक्षक बी.एस. कट्ट के लापता होने के मामले में भी कुलपति की भूमिका चर्चा का विषय बनी हुई है। प्रो. कट्ट ने कुलपति की निरंकुशता,

# भगवा पाठ्यपुस्तकों की एक बानगी

संघ कबीले ने शिक्षा जगत में तथ्यों के साथ छेड़खानी करते हुए जिस प्रकार तोड़-फोड़ मचायी है उसका उदाहरण उनके शिक्षा प्रकोष्ठ द्वारा तैयार की गई तमाम पाठ्यपुस्तकों में मिल जायेगा। महज कुछ बानगियां ही उनके उद्देश्यों का, शिक्षा की उनकी अवधारणा का खुलासा करने के लिए काफी हैं।

उत्तरप्रदेश में जब पहली बार भाजपा सरकार गठित हुई तो उनके निर्देशन में छपी इतिहास की एक पाठ्यपुस्तक में 'प्रामाणिक' तौर पर यहां तक लिखा गया कि "बाबर के स्थानीय अधिकारी मीर बाकी ने अयोध्या में मन्दिर तोड़कर प्राप्त स्थान पर एक मस्जिद बनायी। यद्यपि यह इमारत विवादास्पद है पर हिन्दू जनता इसे मन्दिर मानती है।"

संघ कबीले के शिक्षा प्रकोष्ठ विद्या भारती द्वारा संचालित स्कूलों और भाजपा शासित सरकारी स्कूलों की पाठ्यपुस्तकों पर गौर करें:

भारत की 'आजादी की लड़ाई का इतिहास' बताते हुए एक पाठ्यपुस्तक में कहा गया है, "सैकड़ों बर्बर राक्षसों ने हमारे देश की ओर ललचाई निगाहों से देखा है। अनगिनत लुटेरे आक्रमणकारी अपनी विशाल सेना के साथ यहां आये। कुछ ने हिन्दू धर्म को समाप्त करना चाहा पर वे स्वयं ही समाप्त हो गये और फेंक दिये गये। इसके बार वैसे आक्रमणकारी आये जिनके एक हाथ में तलवार थी दूसरे में कुरान। असंख्य हिन्दुओं को तलवार के जोर से मुसलमान बनाया गया। आजादी की यह लड़ाई एक धर्मयुद्ध बन गई। असंख्य लोगों ने धर्म के लिए अपनी कुर्बानी दी। पर हम अपने से अलग हुए भाइयों को पुनः हिन्दू धर्म में वापस न ला पाये।"

एक अन्य पाठ्यपुस्तक कहती है :

"मुहम्मद गोरी ने लाखों लोगों का कत्लेआम किया। उसने विश्वनाथ मंदिर और भगवान कृष्ण के जन्म स्थान को मस्जिद में तब्दील कर दिया।" एक अन्य जगह लिखा गया है : "बाल विवाह, जौहर, सती प्रथा, पर्दा, जादू-टोना, और अंधविश्वास—ये सब मुसलमानों के डर के कारण थे'।

समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र और नैतिक शिक्षा की पाठ्यपुस्तकों में इस तरह के नमूने जगह-जगह देखने को मिलते हैं : "सती एक राजपूत परम्परा है जिस पर हमें गर्व होना चाहिए।" "आरक्षण को सामाजिक समानता के नाम पर उचित नहीं ठहराया जा सकता। आरक्षण ने राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता को सर्वाधिक क्षति पहुंचाई है।" "बाल विवाह युवाओं में नैतिक पतन को रोकता है और उन्हें यौन अपराधों की ओर जाने नहीं देता।" "किसी जाति के लोग केवल अपनी ही जाति में शादी करते हैं। इससे उनके रक्त की शुद्धता बनी रहती है एवं उनके रक्त में दूसरी जाति के रक्त की अशुद्धियां नहीं आ पाती हैं।"